पाठ संख्या	शीर्षक	मॉड्यूल संख्या
4	भारत की लोक कला	1

संक्षिप्त भूमिका

- भारत की लोककला में आर्यो से पूर्व की संस्कृति की छाप स्पष्ट दिखाई देती है।
- **तंत्र शक्ति, वैष्णव** तथा **बौद्ध** जैसे सम्प्रदाय लोक कलाकारों के जीवन में महत्वपूर्ण हैं।
- ग्रामीण समाज की कला तथा शिल्प कौशल की वस्तुओं की आवश्यकताएं स्थानीय कलाकारों तथा शिल्पकारों द्वारा पूरी होती हैं। ये आवश्यकताएं मुख्य रूप से तीन प्रकार की होती हैं:
  - **कर्मकांडी अथवा अनुष्ठानिक**
  - **उपयोगितावादी**
  - **वैयक्तिक**
- कर्मकांडी लोककला भी कई प्रकार की है जैसे **पटचित्र, पिचआई, अल्पना** तथा **कोलम** आदि।
- यह काम किसी औपचारिक प्रशिक्षण के बिना ग्रामीण कलाकारों द्वारा किया जाता है। यह कला पीढ़ी-दर-पीढ़ी दोहराई जाती है। **हड़प्पन** संस्कृति से लेकर पक्की मिट्टी से बने खिलौनों की परिकल्पना में मुश्किल से कोई परिवर्तन आया है।
- कुछ लोककलाकारों ने पुरानी शैली में नए प्रयोग करके कुछ परिवर्तन किये हैं।
- इस प्रकार के नवीन प्रयोग **मधुबनी चित्रकला, कंथा** तथा **कालीघाट पटचित्रों** के मोटिफ में दिखाई देते हैं।

4.1 कोलम

विवरण

शीर्षक : कलश से फर्श पर की गई चित्रकारी
कलाकार : अज्ञात घरेलू महिला
माध्यम : चावल की पिट्ठी तथा रंग
स्थान : तमिलनाडु में तंजावुर के पास एक बस्ती
काल : 1992
शैली : कोलम

कोलम की विशेषतायें

- भारत में हर एक भाग में अलग-अलग माध्यम में फर्श पर सजावट की जाती है। कहीं पर यह **अल्पना**, कहीं **रंगोली, कोलम** तथा **सांझी** कहा जाता है।
- दक्षिण भारत में **पोंगल** तथा अन्य त्योहारों के अवसर पर प्रत्येक घर के सामने तथा पूजा की बेदी के सामने के स्थान पर फर्श पर सजावट का यह कार्य किया जाता है। यह भाग्य और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है।
- **कोलम** के **डिजायन** और **मोटिफ** पारंपरिक प्रकृति के तथा साथ ही फूलों के तथा ज्यामितीय स्वरूपों में होते हैं।

कोलम के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- मोटे चावल को पीस कर उसके पाऊडर को अगूंठे तथा आगे की उंगलियों के बीच पकड़ कर कलाकार रचना करते हैं।
- कलाकार का हाथ घूमता जाता है और चावल के पाऊडर को फर्श पर पूर्व निर्धारित आकृति के अनुसार गिरने दिया जाता है।
- यह आवश्यक है कि चावल का पाऊडर लगातार बिना किसी रूकावट के गिरता रहना चाहिए।
- **'कोलम'** गृहणियों के द्वारा बनाए जाते हैं और यह कलाकार की स्वतंत्र हाथ से रचना करने के कौशल को दर्शाते हैं। युवा लड़कियां अपनी माँ, दादी, नानी से यह कला सीखती हैं।

स्व-मूल्यांकन

4.1.1 **कोलम** चित्रकारी में मुख्य डिजायन और मोटिफ के बारे में विशेष रूप से बताइए।

4.1.2 देश में फर्श पर सजावट के कुछ प्रसिद्ध नमूनों के बारे में बताइए।

4.1.3 **कोलम** किस का प्रतीक माना जाता है।

उत्तर

4.1.1 फलों एवं ज्यामितीय रूप।

4.1.2 **अल्पना, रंगोली, कोलम, सांझी** आदि।

4.1.3 भाग्य और समृद्धि का प्रतीक।

4.2

फुलकारी

विवरण

शीर्षक : चादर

कलाकार : अज्ञात

माध्यम : कपड़ों की कढ़ाई रंगीन धागों से

काल : समकालीन

फुलकारी की विशेषतायें

- **फुलकारी** का वास्तविक अर्थ फूलों का काम है।
- यह एक प्रकार की कढ़ाई है जिसे बंगाल की लोक महिलाएँ करती हैं।
- **फुलकारी** की परिकल्पना मूल रूप से पारंम्परिक ज्यामितीय आकार की होती है।
- तारों के आकार को सुनहरे पीले तथा सफेद रंग के धागों से लाल कपड़े पर काढ़ा जाता है।
- **मुख्य मोटिफ** में एक बड़े सितारे के चारों ओर छोटे सितारे विभिन्न रूप में काढ़े जाते हैं।
- **मूल मोटिफ**, ज्यामितीय, चौकोर और त्रिकोणीय होते हैं।

फुलकारी के बारे में अपनी समझ विकसित करें

- महिलाएँ पहले अलग-अलग हिस्सों की बाहरी रूपरेखा को सूई से ऊभारती हैं और फिर एक निकटवर्ती दूसरे हिस्से को विरोधी रंगों से भरती हैं।
- उर्ध्वाकार (खड़ा हुआ) तथा क्षैतिज (समतल) धागों के कारण बहुत सुन्दर एवं आकर्षक नमूने बनते हैं।
- कलाकर साधारण **मोटिफ** के साथ-साथ विस्तृत **मोटिफ** का भी प्रयोग करते हैं।

स्व-मूल्यांकन

4.2.1 दर्शाई गई **फुलकारी** चित्र में कलाकार द्वारा किस प्रकार के आकार प्रयोग किए गए हैं।

4.2.2 दर्शाई गई **फुलकारी** में मूल प्रारूप (मोटिफ) में क्या दर्शाया गया है।

4.2.3 **फुलकारी** में कलाकार ने कौन-से माध्यम का प्रयोग किया है।

उत्तर

4.2.1 ज्यामितीय आकार।

4.2.2 एक बड़े सितारे के चारों ओर छोटे सितारे।

4.2.3 कपड़े पर कढ़ाई रंगीन धागों से।

4.3

कान्था

विवरण

शीर्षक : *बंगाली कान्था*

माध्यम : *रेशमी कपड़े पर रंगीन धागों से कढ़ाई*

समय : *समकालीन*

शिल्पकार : *अज्ञात*

कान्था की विशेषतायें

- सूचीबद्ध **कान्था** एक प्रकार की साड़ी है जो एक विशिष्ट पारम्परिक शैली व तकनीक से सिली होती है।
- इनके **मोटिफ** विभिन्न प्रकार के पशु व मानवी आकार के रूप होते हैं।
- साड़ी के गुलाबी रंग के आधार को विभिन्न रंगों के धागे से चैन स्टिच (शृंखला बद्ध कढ़ाई) पद्धति से कढ़ाई की जाती है।
- राजा जैसा दिखने वाला व्यक्ति घोड़े पर बैठा है और उसके सिर पर छाता जैसा लगा है।
- इस **मोटिफ** में **कालीघाट पटचित्र** का प्रभाव बहुत स्पष्ट है।

कान्था के विषय में अपनी समझ विकसित करें

- बंगाल में कढ़ाई और रजाई में अत्यंत मनमोहक कढ़ाई की लोकप्रथा का नाम **कान्था** है। प्रयोग न की जाने वाली पुरानी साड़ी व धोतियों पर **कान्था** बनाई जाती है। बंगाल में सभी श्रेणी की महिलाएं यह कार्य करती हैं।
- **कांथाओं** के मोटिफ और डिजाइन ग्रामीण प्राकृतिक दृश्यों, कर्मकाण्डीय और धार्मिक क्रियाओं, नित्य प्रयोग में आने वाली वस्तुओं, ग्रामीण त्यौहार, सरकस, एवं अन्य मनोरंजन प्रदान करने वाले खेल कूद तथा ऐतिहासिक हस्तियों के चित्रों से लिये जाते हैं।
- इन **कांथाओं** के मोटिफ ये स्पष्ट करते हैं कि इसके कलाकारों में अपने आस-पास की वस्तुओं को गौर से देखने की निरीक्षण शक्ति होती है।

स्व-मूल्यांकन

4.3.1 दिये गए **कान्था** साड़ी में प्रयोग किए गए मोटिफ के बारे में बताइये?

4.3.2 सूचीबद्ध **कान्था** में घोड़े के ऊपर बैठी हुई आकृति को पहचानिए?

4.3.3 कौन-से कलाकार **कान्था** कढ़ाई करते हैं।

उत्तर

4.3.1 विभिन्न प्रकार के पशु एवं मानव आकृति।

4.3.2 राजा जैसा दिखने वाली आकृति ।

4.3.3 लोक कलाकार।

क्या आप जानते हैं?

- कुछ प्रसिद्ध लोक कलाओं के नाम-**कलमकारी, कोलम, मधुबनी, कालीघाट** (पटचित्र), **फूलकारी, कान्था**।
- फर्श पर किए जाने वाले **कोलम** तथा कपड़ों पर कढ़ाई किये जाने वाले **कान्था** एवं **फुलकारी।**
- **मधुबनी, कालीघाट पटचित्र, कोलम** प्रसिद्ध चित्र शैलियां हैं।
- लोककलाकार पीढ़ी दर पीढ़ी समान **मोटिफ** एवं डिजाइन का प्रयोग करते हैं।